बातचीत पाठ के सारांश

प्रस्तुत निबंध 'बातचीत' के रचईता महान् पत्रकार श्री बालकृष्ण भट्ट हैं : बालकृष्ण भट्ट आधुनिक हिन्दी गद्य के आदि निर्माताओं और प्रोत्साहनदाताओं में से एक हैं। बातचीत निबन्ध में बालकृष्ण भट्ट जी मनुष्य की ईश्वर द्वारा दी गई अनमोल वस्तु वाकशक्ति का सही इस्तेमाल करने की शैली का व्याख्या करते हुए कहते हैं कि यदि मनुष्य में वाक्शक्ति न होती तो हम नहीं जानते कि इस गूंगी सृष्टि का क्या हाल होता। सब लोग मानों लुंज-पुंज अवस्था में एक कोने में बैठा दिए गए होते, लेखक आगे कहते हैं कि जहाँ आदमी को अपनी जिन्दगी मजेदार बनाने के लिए खाने, पीने, चलने-फिरने आदि की जरूरत होती है, उसी तरह हमारे जीवन में बातचीत का भी एक खास तरह का मजा होता है। हमारे मन में जो कुछ मवाद (गंदगी) या धुआँ जमा रहता है वह बातचीत ही के जरिए भाप बनकर हमारे मन में बाहर निकल पड़ता है। इससे हमारा चित्त हल्का और स्वच्छ हो परम आनंद में मग्न हो जाता है। भट्टजी के अनुसार जब तक मनुष्य बोलता नहीं तब तक उसका गुण-दोष प्रकट नहीं होता।

महान् विद्वान वेन जानसन का भी यही मानना था कि बोलने से ही मनुष्य के रूप का सही साक्षात्कार हो पाता है।